Name : **Manita Rani**
Supervisor : **Dr. Anil Kumar**
Department : **Hidni**
Subject : **Haryanvi Lokkathaon Ka Samajshastriya Adhyayan**

शोध-सार

समाजशास्त्र को सामान्यत: समाज का विज्ञान कहा जाता है। जिसमें समाज एवं सामाजिक जीवन से संबंद्ध घटनाओं एवं अंत: क्रियाओं का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र का सीधा अर्थ है- 'समाज का शास्त्र' साहित्य का समाजशास्त्र साहित्य को एक ऐसी सामाजिक संस्था के रूप में देखता है, जिसके आस-पास सामाजिक संबंध, परंपराएँ, रीति-रिवाज और व्यवहार पद्धतियाँ होती है। किसी भी साहित्यिक कृति में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं नैतिक परिस्थितियाँ तथा मूल्य व परम्पराएँ रचनाकार की अनुभूतियों द्वारा आकार पाते हैं। साहित्य के समाजशास्त्र की विषयवस्तु का आधार साहित्य होता है।

मनुष्य के सुख-दुख, प्रीति-बैर, शृंगार वीर भाव आदि भाव लोक कथाओं को पुष्ठ करते है कथा मनुष्य के अपूर्ण विश्रान्ति का साधन है। ''वास्तव में कथा की ऐसी मौखिक परम्परा जिसमें लोक मानस के तत्व विशेष रूप से विद्यमान हो और जिनका उद्देश्य जन-मनोंरजन के अतिरिक्त प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ज्ञानवर्धन भी हो, वही हमारी दृष्टि से लोककथा कहलाई जाएगी।'' यदि लोककथाओं को लोकजीवन का कोश कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

हरियाणा की अनेक जनपदीय उपभाषाएँ तथा बोलियाँ हैं- बांगरू, कौरवी (खड़ी बोली), अहीरवाटी, बागड़ी, मेवाती और ब्रज है। जिला रोहतक की बांगरू को स्थानीय बोली में जाटू कहते हैं जाटों की बोली होने के कारण इसे यह नाम मिला है। बांगरू बोली को ही यहाँ लोकभाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसे हरियाणवी लोकभाषा भी कहा जाता है, इस अध्ययन में जिन लोककथाओं का विश्लेषण किया गया है, उनकी लोकभाषा हरियाणवी है, वर्तमान समय में हरियाणा 20 जिले हैं।

सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश के माध्यम से, समाज, परिवार, जाति, सामाजिक कुप्रथाएँ, विवाह आदि पर विचार किया गया है। ''लोक साहित्य समाज के स्वरूप का सच्चा प्रतिनिधि होता है। सामाजिक जीवन के विशद चित्र लोक साहित्य में देखने को मिलते हैं किसी क्षेत्र विशेष के सम्यक् ज्ञान के लिए वहाँ के स्थानीय साहित्य अर्थात् लोक साहित्य का गहन अध्ययन आवश्यक है क्योंकि लोक साहित्य मौखिक साहित्य है एक मुख से दूसरे तक आता जाता सुरसरी गंगा-सा प्रवाह बना लेता है।'' हरियाणा के प्रत्येक सामाजिक पहलू का चित्र यहाँ की लोककथाओं में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

सामाजिक परिवेश के अंतर्गत पारिवारिक संबंध-आदर्श प्रेम, नारी की परतंत्रता तथा रीति-रिवाज आते है। समाज के अध्ययन के लिए भी लोककथाएँ उत्तम साधन है। इसके अंतर्गत सामाजिक आचार-विचार, रीति-रिवाज तथा सामाजिक कुरीतियों आदि का भी उल्लेख मिलता है।

परिवार हमारे समाज की एक महत्त्वपूर्ण एवं संगठित ईकाई है जिसमें नाना सम्बन्धों के सूत्रों में व्यक्ति बड़ी सुगढ़ता से बन्धे रहते हैं। भारतवर्ष में संयुक्त परिवार की परम्परा बहुत पुरानी है। यद्यपि आधुनिक जीवन में औद्योगीकरण शहरीकरण के कारण यह प्रथा टूटती जा रही है। परन्तु लोक समाज में अब तक भी यत्र-तत्र इसका प्रबल अस्तित्व विद्यमान है।

हरियाणवी समाज में वर्तमान समय में भी गोत्र को विवाह का आधार बनाया जाता है। समय बदल चुका है। लेकिन एक गोत्र में विवाह करने और करवाने वालों को हरियाणवी समाज में दोषी माना जाता है। ऐसा करने पर उन्हें दण्ड स्वरूप भारी कमीत चुकानी पड़ती सकती है।

विभिन्न मानव समाजों में विवाह के पृथक-पृथक रूप प्रचलित हों किन्तु विवाह का मूल उद्देश्य सर्वत्र

एक है। सम्भवत: संसार का कोई भी समाज नहीं है जहाँ विवाह संस्कार की उपेक्षा की जाति है, इसे विशेष महत्त्व न दिया जाता हो मानवीय समाज का विकास विवाह के बिना असम्भव है।

प्रत्येक मनुष्य आज के युग में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना चाहता है। अर्थ के बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है, प्रत्येक कार्य में धन की आवश्यकता पड़ती है। लोककथाएँ भी आर्थिक व्यवस्था से अछूती नहीं है। हरियाणवी लोककथाओं में भी आर्थिक जीवन का अत्यन्त सहज रूप में प्रतिबिम्बित है। लोक समाज की आर्थिक विषमता का जैसा यथार्थ चित्रण लोककथाओं में मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। लोककथाओं में दरिद्रता और समृद्धि दोनों का ही वर्णन हुआ है। अधिकतर लोगों का व्यवसाय खेती-बाड़ी है। निम्न जाति के लोग बड़े किसानों के यहाँ खेतों में मजदूरी करके अपना जीवनयापन करते है। हरियाणा एक कृषि प्रधान प्रदेश है, इसके अतिरिक्त यहाँ के शिल्पकारों एवं दस्तकारों की अच्छी खासी पहचान है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के दो दशक बाद तक यहाँ के लोक समाज में लघु उद्योग-धन्धों की एक सुदृढ़ परम्परा रही है। इस प्रकार इस प्रदेश की आर्थिक स्थिति के विषय में कहा जा सकता है कि हरियाणवी लोक कथाओं में अमीर-गरीब दोनों ही वर्गों का चित्रण भलि-भांति हुआ है।

सांस्कृति परिवेश के अन्तर्गत, संस्कृति, लोकविश्वास, संस्कार, लोक व्यवहार आदि को केन्द्र में रखकर लोककथाओं का अध्ययन किया गया है। संस्कृति का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। जाति या राष्ट्र की वे सब बातें जो व्यक्ति के मन, रूचि, आचार-विचार, कला-कौशल एवं सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक हैं, संस्कृति के अंतर्गत आती है। ''मनुष्य ने देश और काल में विश्व के रंगमंच पर जो मन से सोचा है, कर्म से किया है और भौतिक माध्यम ने ग्रहण किया है वही मानव संस्कृति है। किसी समाज के लोगों के खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, शिक्षा दीक्षा, लोक आस्था, राज-काज, धर्म-कर्म का समन्वित रूप ही उसकी संस्कृति को जन्म देता है''। ''लोक संस्कृति का क्षेत्र विस्तृत है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत उन जन जातियों के उत्सव, त्योहार, पर्व, रूढ़िया अन्धविश्वास एवं लोक कलाओं की पहचान आवश्यक है। यों भी लोक शब्द का अर्थ उस समाज के उस वर्ग से हैं जो अभिजात्य संस्कारों और पाण्डित्य के अंहकारों से मुक्त होता हैं इसी लोक अभिव्यक्ति में लोक तत्त्वों को देखा जा सकता है।'' हरियाणवी समाज में लोक विश्वासों के प्रति अटूट आस्था एवं श्रद्धा रखते है। प्रत्येक समाज में कुछेक सामान्य विश्वास एवं धारणाएँ होती है। जिनके बल समाज के लोग अपना जीवनयापन करते रहते है।

हरियाणा के लोग अधिकतर अशिक्षित होने के कारण यहाँ पर लोक विश्वास और अधिक उभर कर सामने आते है यद्यपि आज के भौतिकवादी समय में लोग उनका उपहास उड़ाते हैं किन्तु हरियाणवी समाज में स्त्री पुरुष इनमें पूर्ण विश्वास रखते है। हरियाणवी लोक संस्कृति में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय संस्कृति कर्म फल पर पूरी आस्था रखती है।

पांच शीर्ष बिन्दु :

- समाजशास्त्रीय अध्ययन,
- हरियाणवी लोककथा
- लोकभाषा
- संस्कृति
- लोक आस्था